मैथिली गाथाओं का करें अनुशीलन : अग्निमित्र

जासं, जमशेदपुर : मिथिला सांस्कृतिक परिषद व साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय मैथिली संगोष्ठी का समापन सोमवार को हो गया। गोलमुरी स्थित विद्यापति परिसर में साहित्यिक विकास में लोकगाथा व लोकगीत के अवदान पर राष्ट्रीय मैथिली संगोष्ठी में सात शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

अध्यक्षीय संबोधन में घाटशिला के डा. मित्रेश्वर अग्निमित्र ने कहा कि हमारे समाज में लोक गाथा व गायन को देखना वर्जित था। उस कड़ी को तोड़ मैंने अपने गांव के निम्नवर्गीय लोगों के बीच जाकर गाथा-गायन और नृत्य देखा। सुना है कि मिथिला में जब कोई लिखित साहित्य नहीं था, तब लोकगाथा ही उसे जीवित रखे हुए थी। मिथिला को जानना है तो मैथिली गाथाओं का अनुशीलन करें। दूसरे दिन साहित्यकार डा. शिव प्रसाद यादव ने वर्तमान संदर्भ में लोक साहित्यक और ऐतिहासिक उपादेयता, बुचरु पासवान ने मैथिली साहित्यक विकास में मैथिली लोक साहित्यक योगदान, चेतना झा ने मैथिली लोकगीत में नारी विमर्श, अमित कुमार ठाकुर ने मैथिली लोकगीत आधार संस्कार गीत, महेंद्र नारायण राम ने सलहेस लोकगायक ऐतिहासिक महत्व पर शोध पत्र प्रस्तुत कर सलहेस गाथा का गायन भी किया। डा. रवींद्र चौधरी ने मैथिली लोकगाथा के भौगोलिक परिक्षेत्र के विषय में मिथिला के मानचित्र के माध्यम से बताया। जल संसाधन विभाग के मुख्य अभियंता अशोक कुमार लाल दास ने गोलमुरी स्थित विद्यापति प्रांगण में एक जनवरी को विद्यापति की प्रतिमा स्थापित करने की घोषणा की।

गोलमुरी स्थित विद्यापति परिसर में उपस्थित मैथिली के विद्वान • जागरण

- **सोमवार को हो गया दो दिवसीय मैथिली संगोष्ठी का समापन**
- **गोलमुरी में एक जनवरी को लगेगी विद्यापति की प्रतिमा**

25 हजार रुपये की किताबें लाइब्रेरी के लिए खरीदने की घोषणा मिथिला सांस्कृतिक परिषद की ओर से की गई

डा. झा ने प्रस्तुत किया पर्यवेक्षीय प्रतिवेदन

समापन सत्र में पर्यवेक्षीय प्रतिवेदन साहित्य अकादमी, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के मैथिली परामर्श मंडल संयोजक डा. अशोक कुमार झा अविचल ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादमी के उपसचिव डा. एन सुरेश बाबू ने मैथिली भाषा-भाषियों के प्रति आभार व्यक्त किया। मिथिला सांस्कृतिक परिषद ने 25 हजार रुपये की किताबें लाइब्रेरी के लिए खरीदने की घोषणा की।